ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)60-65

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

महेश शर्मा

धार, म. प्र.

Corresponding Author :

महेश शर्मा

धार, म. प्र.

कहानी

अधोन्नति

ये चौथा साल था आदित्य को इंडिया आये। दशहरा दिवाली सामने आ रहे थे। अबकी बार रुकमनी एक माह पहले से आदित्य को हर दूसरे तीसरे दिन फोन लगाती, उसपर नाराज होती, उसे उलाहना देती। फिर आग्रह करती, आग्रह करते करते गिडगिडाने लगती और इस बातचीत का अन्त होता रोने से। मै और विम्मी मेरी बेटी आदि हो चुके थे रुकमनी के इस अर्थहीन रवैये से, जिसका कोई परिणाम नहीं निकलना था। उसकी इस दिनचर्या से कम से कम सप्ताह में दो बार घर का वातावरण अत्यंत निराशाजनक उत्साहहीन और भारी हो जाया करता था। दो चार बार जब मैंने नाराज होकर रुकमनी को इस व्यवहार के लिए डांटा तो स्थिति ज्यादा विकट हो गई। रुकमनी का कहना था कि यदि कोई अपना राह भटक जाये अपनी जिम्मेदारियां भूल जाये तो उसे सही रास्ते पर लाने का प्रयास क्यों नहीं करना चाहिए और ये कि मैँ मेरे बेटे को सुधारने की कोशिश कर रही हूँ आपको क्या? अब मैँ इस बात पर चुप रह जाता बल्कि मैँ भयभीत था। समझ रहा था कि रुकमनी की मनस्थिति साइको पेशेंट सी होती जा रही थी।

मुझे आदित्य का ख्याल आया। किस मिटटी का बना है वो? उसे अपने परिवार से कोई मोह नहीं है? उसे माँ का आग्रह, माँ की विनती भी कतई प्रभावित नहीं करती? इतनी निष्ठुरता कैसे आ सकती है किसी के दिल में और किसी की क्यों ,बेटा है वो, तो बेटे के दिल में क्या जरा ममत्व नहीं? ये कैसा विकास है? ये कैसी उन्नति है कि बेटा विदेश पड़ने जाये और वहीँ का होकर रह जाये। अपने बूढ़े माँ बाप को भूल जाये अपनी छोटी बहन को भूल जाये अपने सँस्कार अपनी जाती समाज और अपने देश को भूल जाये। ये उन्नति नहीं अधोन्नति ही तो कही जाएगी।

मुझे याद आया चार साल पहले का वो घटनाक्रम जब ८ दिन के लिए आदि इंडिया आया था और माँ बाप और छोटी बहन के दिल को तार तार कर कई कई घाव लगाकर वापस चला गया था। फिर उसके बाद कभी कभी गाहे बगाहे फोन पर बात होती थी रुकमनी तो उसके निम्नतम व्यवहार को ६ माह में ही भूलकर बेटा आदि, मेरा आदि , मेरा आदि की रट लगाने लगी उसे इंडिया आने के लिए आग्रह करने लगी थी,

फिर भी उसका आदि नहीं पिघला था। झूठे वादे और आश्वासनों से उसने फिर ४ साल निकाल दिए थे। मुझे याद है उन आठ दिनों का सारा घटनाक्रम।

हँसते मुस्कराते सीधे सादे स्वभाव के आदित्य को डीज़ल इंजीनियरिंग कोर्स के लिए स्वीटझरलैँड की प्रसिद्द यूनिवर्सिटी में पढने भेजा था। अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर स्टेट बेंक से दस लाख का लोन लेकर बेटे को विदेश भेजा इस सपने के साथ कि बेटा विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा, शानदार नौकरी करेगा नाम होगा पैसा अच्छा मिलेगा परिवार को सुखी करेगा। इन कल्पनाओं से ही मेरा सीना चोड़ा हो जाता था। मेरे स्टाफ के लोग मेरे रिश्तेदार मुझसे इर्ष्या करते थे। ४ साल का कोर्स पूरा होते होते कानपूर के एक सँपन्न बड़े अधिकारी की बेटी का रिश्ता भी आ चूका था। मैने बड़ी ख़ुशी ख़ुशी पत्नी से फोन लगवाकर आदित्य को तत्काल इंडिया आने का बोल दिया था छुट्टियाँ लेकर , ताकि एक माह में ही विवाह सम्बन्धी सब कुछ कर डालूं लेकिन बस वही आखरी दिन था मेरे सकून का। वही दिन था मेरे सारे सपनो के टूट टूट कर बिखर जाने का। जैसे ही रुकमनी ने आदित्य को फोन लगाया और बताया कि उसकी शादी की बात पक्की करना है इसलिए तत्काल इण्डिया आ जाये। और जो जवाब उधर से आया उसने हमारे घर में एक तूफान मचा दिया। आदित्य आज से तीन साल पहले शादी कर चूका था एक स्विस लड़की से। आप विश्वास करेंगे ? कोई भी विश्वास करेगा? मैँ क्रोध से पागल हुआ जा रहा था। रुकमनी बदहवास थी, हम सब सकते में थे। मेरा मासूम बेटा जो ४ साल पहले पढने गया था, वो तीन साल पहले शादी कर चूका है और हमसे पूछना तो दूर की बात हमें भनक तक नहीं लगने दी! बताया तक नहीं! इससे बड़ा गजब और क्या हो सकता हे एक हिन्दुस्तानी माँ और बाप के लिए इससे बड़ा अचंभित कर देने वाला हादसा क्या हो सकता हे?

सारे घर के लोग हताश और स्तब्ध स्थिति में आ गए थे। मित्रोँ के समझाने पर एवं इस घटना को सामान्य बनाने तथा अपने परिवेश में आदित्य की शादी को सामाजिक मान्यता दिलाने या यूँ कहे की सबका मुँह बंद करने के लिए आदित्य को इंडिया बुलाकर एक पारिवारिक सामाजिक उत्सव जैसी पार्टी या सहभोज रखने का निर्णय लिया गया।

इस हेतु जब आदित्य इंडिया आया तो एक और वज्राघात तैयार था हम सब के लिए। जब एयरपोर्ट से उतरते आदित्य और उस स्विस लड़की के बिच दोनों के हाथ पकड के चलते एक नन्हे विदेशी बच्चे को देखा, तो हम तीनोँ यानि मै रुकमनी और मेरी मासूम बेटी विम्मी मानो आकाश से बहुत गहरे पाताल में जा गिरे उफ्फ! क्या आदित्य एक बच्चे का बाप भी बन चूका है? हाँ यही कटु सत्य था कि चार साल पहले विदेश पढ़ाई करने गए आदित्य ने बिना घर वालो को बताये शादी कर ली थी तीन साल पहले। और उसका एक दो साल का बच्चा भी था! यानि न तो हमने आदित्य के लिए लड़की खोजने का श्रम किया न शादी का कोई उत्सव कोई आनंद भोगा न ही हमने हमारे पोते के जन्म लेने की ख्वाहिश की, उसके लिए आग्रह किया या उसका बेसब्री से इन्तेजार किया और सब कुछ हो गया सब कुछ आ गया। अब मैं और मेरा परिवार इस पर खुशियाँ मनाये या दुखी हो या क्या करे? हम सब हतप्रभ थे सकते में थे। हमारे लिए ये खबर ये द्रश्य आसमान से जमीन पर गिरने वाला नहीं बल्कि जमीन से हजारो फिट गहरे पाताल में धंस जाने जैसा था।

आदि इन सब बातों का कोई संतोषजनक कारण नहीं बता पाया। यदि वो ये सब हमें बता कर करता, पूछ कर करता, हम भले विरोध करते या मान जाते लेकिन हमारी जानकारी में करता तो इतना दुःख नहीं होता। और हम मना कैसे करते? जब बेटे के सुख की कोई बात हो तो कौन माँ बाप ज्यादा विराध कर पाते हैं? वैसे भी विदेश पढने जाने के बाद विदेशी लड़की से शादी कर लेना कोई बहुत विचित्र बात नहीं थी। लेकिन ये बात तो विचित्र नहीं बहुत आश्चर्यजनक, बहुत दुखदाई और मानसिक क्लेश पहुँचाने वाली थी कि, आपका बेटा आपको कुछ भी बताए बगैर शादी कर ले इस बात को तीन साल तक छुपाये रखे बल्कि बच्चे का बाप बन जाये इतनी खास बात भी बताना जरूरी न समझे। तो अब क्या बचा। उसका और हमारा रिश्ता क्या रहा। स्विस पत्नी और बेटे के साथ इंडिया आकर आदि दो दिन तो जैसे तैसे घर में रहा फिर शहर की एक होटल में शिफ्ट हो गया, यह कह कर की पत्नी नेन्सी को घर सूट नहीं हो रहा और नन्हे हेरी को सोने को अलग से रूम चाहिए जो हमारे घर में उपलब्ध नहीं हो पाया था।

और इस तरह माँ बाप और बहन के हृदय को विदीर्ण करते, दुःख पहुंचाते शहर के सारे मेरे परिचितों और रिश्तेदारों में मेरी छबि को ध्वस्त करते कुछ बुरे लम्हो की सौगात देते हुए पंद्रह दिन में आदि वापस जा चूका था। मेरा दुर्भाग्य देखिये की आदि की पत्नी स्विस होने से उसकी भाषा भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं थी तो में अभागा अपनी बहू और पोते से समुचित बाते भी नहीं कर पाया था। आदित्य के लौट जाने के बाद पुरे एक माह तक मैं खुद, रुकमनी और विम्मी जबरदस्त सदमें में रहे। इन बातों को पुरे चार साल होने जा रहे थे। आदित्य उसके बाद एक बार भी इंडिया नहीं आया। मैने इस घटना को नियति का चक्र मान कर जो मेरे बस में नहीं था भुलाने की कोशिश की और ऑफिस की व्यस्तता में भूलता भी गया। विम्मी भी अपनी पढाई में सहेलियों को भाई आदित्य की झूठी सच्ची बाते बताते सामान्य होती गई, बावजूद इसके कि हमारा हृदय हमारा दिमाग और हमारा विश्वास जो गहरे तक छलनी हुआ था वैसा ही रहा।

लेकिन गज़ब यह था कि रुकमनी का दिलोदिमाग उसकी बुद्धि ये मानने को तैयार ही नहीं थी कि उसका बेटा आदित्य उसके जिगर का टुकड़ा विदेश जाकर विदेशियों में रहकर इतना निष्ठुर हो जायेगा इतना निर्मोही हो जायेगा। उसे जानकारी थी कि विदेशो में खासकर यूरोपियन संस्कृति से प्रभावित देशो में पारिवारिक संबंधो में ज्यादा गहराई नहीं होती। ममत्व नहीं होता। स्वार्थ और खुद की सुविधाएं ही मुख्य होती है। वहाँ रिश्ते भावनाओ की मजबूत डोर से या बाध्यताओं से नहीं वरन अपने अपने मूड से अपनी अपनी पसंद से निभाऐ जाते हैं, और ये मूड या इस पसंद का कोई स्थाईत्व भी नहीं होता।

माना यह जाता है कि बचपन के संस्कार परिवार की परम्पराएं और प्रवृत्तियाँ सरलता से नहीं बदलती तो क्या विदेशी संस्कृति इतनी ज्यादा प्रभावी रही कि उसने भारतीय मान्यताओं परम्पराओं को ध्वस्त कर दिया। मैं समझाता था रुकमनी को कि यह जो इन्सान है न उसने दुनिया की कई कई स्थापित मान्यताओं को परम्पराओं को अनेक बार तोडा है। मनुष्य की मन:स्थिति का कोई भरोसा नहीं। लेकिन रुकमनी का दिल नहीं मानता इन सब दलीलों को। वो तो महीने पँद्रह दिनों में आदित्य को फोन लगाती रहती। आदित्य से तो कुछ बात होती भी लेकिन बहु और पोते से तो कुछ बात भी नहीं हो पाती। रुकमनी टूटी फूटी अंगरेजी तो समझती थी पर बहु की स्विस इंग्लिश नहीं समझती और नन्हे पोते की तुतलाती विदेशी भाषा के कुछ शब्द ही उसकी पकड़ में आते। उधर नेन्सी और हैरी को हिंदी का कुछ भी ज्ञान नहीं था ऐसे में क्या तो आपसी स्नेह पैदा होता क्या मोह बढ़ता।

बस ऐसे ही समय चलता रहा। रुकमनी घर का सारा काम करती हंसती बोलती लेकिन उसकी वो पहले वाली अट्टहास करती उन्मुक्त हंसी न जाने कहाँ गायब हो चुकी थी। उसके दिल के किसी उदास कोने में आदित्य की याद एक टिमटिमाते दिए की लपलपाती लौ की तरह उसके हृदय परिवर्तन की आस में झिलमिलाती रहती। और ये आस राखी दीपावली या दशहरे जैसे त्योहारों के समय प्रचंड ज्वाला सी दहकने लगती। मैं बहुत घबराता था जब जब ये त्यौहार आते उन दिनों रुकमनी का विशेष ध्यान रखना पड़ता था। वो विक्षिप्त सी हो जाती थी।

अचानक मुझे याद आया वो दिन आदित्य के वापस विदेश जाने के एक साल बाद की बात है शायद दीपावली के दो दिन पहले की। अचानक रुकमनी की तबियत बिगड़ी तेज बुखार आया ब्लड प्रेशर डाउन हुआ और वो डिप्रेशन में आ गई। शायद दो दिन पहले आदित्य से हुई बातचीत का परिणाम था यह। तत्काल अस्पताल एडमिट किया गया दुसरे दिन पता चला पेरेलिसिस का अटैक था जो एक हाथ और एक पाँव के अलावा कुछ कुछ दिमाग पर भी प्रभाव डाल रहा था। पूरे घर में कोहराम मच गया था। हम दोनों यानि मै और विम्मी इतने बदहवास थे कि पूरे तीन दिन तक खाने पीने का भी होश ना था। एक सप्ताह लगा जब कुछ सकून आया रुकमनी इस पेरेलिसीस अटैक का अस्सी प्रतिशत वापस कवर कर चुकी थी, लेकिन उसकी दिमागी हालत ज्यादा ठीक नहीँ थी। यद्यपि डाक्टर गुप्ता जो हमारे घर की सारी स्थिति से वाकिफ थे आदित्य वाला मैटर भी वो जानते थे, उनका कहना था कि आदित्य जल्दी से जल्दी आ जाये तो रुकमनी की हालत में पूरा सुधार आ सकता है। लेकिन मुझे .....जी हाँ मुझ अभागे बाप को इस बात की

आशा बहुत क्षीण ही थी कि आदित्य यह सुन कर दौड़ता चला आएगा। और वही हुआ मेरे विदेशी बेटे ने मेरे अनुमान को पूरा पूरा सही सिद्ध किया। उसे कभी तो छुट्टी नहीं मिली कभी फ्लाइट का टिकिट नहीं मीला। कभी कुछ कभी कुछ और अंततः हमारे परिवार की गाड़ी शने: शने: फिर चल पड़ी। समय फिर चल पड़ा शायद दुनिया में समय ही एक ऐसा चलायमान कारक है जो कभी भी नहीं रुकता। कहीं भी नहीं रुकता सुख हो या दुःख, विरह हो या मिलन, वेदना हो या खुशियाँ यह गुजरता ही रहता है। लोग कहते हैँ मनुष्य का दिल बहुत नाजुक होता हैँ लेकिन झूठ है। कितना सशक्त होता है मनुष्य का दिल भी और दिमाग भी। बड़े बड़े हादसे झेलता है , विचलित होता है लेकिन फिर सम्हलता है। फिर आशाओं के मोहक जाल में उलझ कर नए नए सपने देखने लगता है।

रुकमनी को ही देख लो।मैं सारा पिछला विषाद भूल कर वर्तमान में लौटा। चौथा साल गुजर रहा था। फिर दिवाली आ रही थी पांच छ: दिन बाद। हर साल की तरह पिछले पंद्रह दिनों से उसकी आदित्य से मान मनुहार चल रही थी। लेकिन आदित्य ने हमेशा की तरह कोई पक्का प्रोमिस नहीं किया था आने का। बस आश्वासन दे रहा था। सुबह के खाने से निपट कर में ऑफिस जाने को तैयार बैठा था तभी रुकमनी के मोबाइल की घंटी बजी और स्क्रीन पर नाम उभरा आदित्य का। रुकमनी हुलस उठी आदित्य का फौन है आने की खबर दे रहा है। वो हेल्लो हेल्लो कह रही थी। मोबाइल का स्पीकर ऑन था लेकिन उधर से कोई आवाज नहीं आ रही थी। मैँ तटस्थ भाव से उसे देख रहा था लेकिन मेरे कान क्षीण सी आशा लिए कुछ अच्छा सुनने को लालायित थे।

ओफ यहाँ तो नेटवर्क भी बहुत कमजोर है। रुकमनी बाहर भागी यह बोलती हुई कि कब आ रहा है आदित्य तू? मैँ घर के अन्दर सोफे पर बैठा था लेकिन उधर का जवाब हलकी हलकी आवाज में मेरे कानो में पड़ रहा था। आदित्य कह रहा था मम्मी मैँ आऊंगा कुछ दिनों बाद। "क्यों अभी क्यों नहीं बेटा दिवाली का त्यौहार है तू अभी आजा" रुकमनी का रुंआसा होता स्वर निकला।

वो माम् ऐसा है कि मेरे कुछ दोस्तों ने अचानक अन्टार्कटिका का प्रोग्राम बना लिया है हम तीनोँ जा रहे हैँ। बहुत फ़ोर्स है फ्रेंड्स का। बट यु डोंट वरी माम् मैँ शीघ्र ही इंडिया आने का प्रोग्राम .....और आगे कुछ क्षणों की चुप्पी सी लगी मुझे। मैने घूम कर आगे की और देखा रुकमनी को , अरे ये क्या .... रुकमनी के हाथोँ मोबाइल छुट कर गिर चूका था और वो पलट कर अन्दर की और भागती हुई आती दरवाजे से धडाम से टकरा चुकी थी। मैँ उस तक पहुँचता तब तक वो निचे फर्श पर गिर चुकी थी। रुकमनी .....मै जोरो से चीखा विम्मी भी अन्दर से भागी आई। मैने रुकमनी को उठाया सोफे पर लिटाया बेहोश हो रही थी रुकमनी। मैने तत्काल गाड़ी निकाली। गुप्ताजी के क्लिनिक में एडमिट रुकमनी का ब्लड प्रेशर डाउन हो रहा था। शरीर पर चोँट कोई खास नहीं थी पर उसका दिमाग सुन्न होता जा रहा था, आवाज निकलना बंद हो गई थी। एक घंटे बाद ही उसे आई सी यु में ले जाना पड़ा। मेरे कुछ दोस्तों को खबर हो चुकी थी कुछ स्टाफ वाले भी दौड पड़े थे। मैँ और विम्मी असहाय से आई सी यु के बाहर खड़े थे। डॉ गुप्ता लगातार अन्दर ही थे। दो घंटे बाद मुझे अपने चेंबर में बुलाकर डॉ गुप्ता ने जो सुनाया उसके बाद मेरी तन्द्रा सुन्न हो चुकी थी। मैं पत्थरवत खड़ा रहा तभी मुझे हिलाकर डॉ ने कुर्सी पर बिठाया, मुझे याद दिलाया कि बाहर आपकी बेटी भी है, मुझे उसका भी ध्यान रखना है। मेरी स्मृति ने दोहराया जो डॉ ने मुझसे कहा था "आपकी वाइफ को फिर पेरेलिसिस का अटैक है लेकिन वो जीभ और गले पर है। उनका बोलना और श्वास लेना एफेक्टेड है। तत्काल उन्हें स्यूडो श्वास नली डालना होगी। मैँ सर पकडे बैठा था, तभी विम्मी भी अन्दर आ चुकी थी जो मेरे सर को अपनी बांहों में घेरे मुझे सांत्वना दे रही थी। विम्मी का स्पर्श पाकर मैँ रो पड़ा, लेकिन तत्काल मैने स्वयं को रोका। विम्मी मेरी माँ जैसा एहसास दे रही थी मुझे लेकिन वो बेटी थी मेरी, माँ नहीं। यदि वो टूट गई तो?

मैने स्वयम को नियंत्रित किया। तभी गोपाल बाबु, मेरे साथी मेरे नजदीक आये। सर जी आदित्य का नंबर दो। क्यों ? मुझे नहीं पता कैसे मेरे होंठो से निकला यह प्रश्न। अरे उसे खबर तो करें, तत्काल निकलेगा तो कल तक आ जाएगा। रहने दो वो नहीं आएगा। फिर मेरे होंठ हिले। पागल हो क्या उसे खबर होगी तभी न वो आएगा।गोपाल बाबू बोले "अंकल में देती हूँ नंबर भैया का" विम्मी ने अपना मोबाइल टटोला।

डॉ गुप्ता फिर आई सी यु में जा चुके थे। कब रात बीती कब सुबह हुई मुझे कुछ एहसास नहीं था। कोई खाना लाया था। पड़ा रहा खाना रात भर। मेरे मृतप्राय शरीर में अचानक तब जान आई जब डॉ ने सुबह मुझे झिंझोड़ते हुए कहा तुम रुकमनी से मिल सकते हो। उससे बात नहीं हो पायेगी लेकिन तुम उसके नजदीक जा सकते हो उसे देख सकते हो।

मैँ दौडा, मैँ भागा, दुनिया में मेरा सबसे बेशकीमती सामान, मेरी जान मेरे प्राण, उसे मैने पिछले १२ घंटे से नहीं देखा था। रुकमनी अचेतन सी बेड पर लेटी थी उसके मुंह से दो तीन नलियाँ निकल रही थी। उसके बोलने का तो प्रश्न ही नहीं था लेकिन ईश्वर प्रदत्त एक और भाषा थी स्पर्श की। मैने धीरे से मेरा हाथ उसके हाथ पर रखा और उसने सुना मेरा स्पर्श और मुझे जवाब मिला उसकी सिहरन भरी हलके से कम्पन से उसकी आँखे अधखुली सी देख रही थी मुझे। तभी डॉ गुप्ता ने मुझे वापस बाहर बुला लिया। प्लीज आप दो तीन घंटे बाद उन्हें और बेहतर पाएंगे अभी बाहर आ जाएँ। मैं सहज होने लगा। मुझे लगा मैँ गरीब नहीं हूँ। अभागा नहीं हूँ। मेरी जीवनसाथी मेरे पास अभी है। एक क्या हजारोँ आदित्य भी मुझसे दूर चले जायेँ, मुझे गम नहीं। मैने विम्मी को धीरज बँधाया। हमने दूसरे दिन खाना भी खाया। हम सहज होने लगे। रुकमनी को होश आ चूका था, वो मुझे देख रही थी। मेरी रुकमनी मुझे देख रही थी, समझ रही थी लेकिन हाँ एक अव्यक्त मौन के साथ निःशब्दरुप में लेकिन मुझे इतने से भी संतोष था। मुझे बिलकुल याद नहीं आया कि गोपाल बाबु से पुछूं कि क्या हुआ आदित्य को खबर करने का ? खुद गोपाल बाबु ने बताया कि उन्होंने रात को ही खबर कर दी है रुकमनी भाभी की बीमारी की। हालाँकि उधर से किसी औरत की आवाज थी जिसने मेरा मेसेज सुन लिया था हो सकता है आदित्य आ जाये कल तक। परंतु मुझे कोई दिलचस्पी नहीं थी कब आएगा आदित्य ? आएगा भी या नहीं।

पुरे १० दिन रहना पड़ा हमें अस्पताल में। डॉ के कहने से तो हमें अभी भी रहना था अस्पताल में ही क्योंकि रुकमनी को अभी भी श्वास नली और भोजन नली लगी हुई थी। उसे खाना भी नली से ही तरल रूप में देना पड रहा था लेकिन रुकमनी इशारोँ में बार बार कह रही थी कि घर चलो अब घर चलो। डॉ गुप्ता ने अंतत: कह दिया था कि कल छुट्टी दे देंगे , लेकिन एक नर्स रखना होगी। घर पर पूरी सावधानी रखना होगी। शाम को डॉ गुप्ता ने रुकमनी की सारी जाँचे फिर से करवाई। बस उसके बाद देर रात तक उनका रवैया बदल चूका था। वो मुझसे मिलने से भी कतरा रहे थे। रुकमनी को वापस आई सी यु में ले जाया जा चूका था। मुझे कुछ संदेह होने लगा मैँ विचलित होने लगा। बार बार पूछने पर डॉ गुप्ता ने बड़े ठन्डे स्वर में बताया चिंता की तो कोई बात नहीं है , हमने पेरेलिसिस के इफेक्ट पर कंट्रोल कर लिया है। लेकिन अब समस्या इन्फेक्शन की है। इतने समय तक गले में दो दो तीन तीन नलियाँ लगी रहने से काफी इन्फेक्शन हो चूका है।

मुझे आशा थी कि अस्पताल की निराशाजनक उदासीन काली काली अँधेरी रातोँ से शायद कल मुक्ति मिल जाएगी। रात भर हमें बाहर रखकर ना जाने क्या क्या उपचार चलता रहा रुकमनी का , और सुबह चार या पाँच या छ बजे पता नहीं जब पूरब से सूरज अपनी पूरी लालिमा लिए उभर रहा था , दुनिया को एक नए प्रभात का संदेशा देने लगा था , डॉ गुप्ता ने मुझे मेरे जीवन की सबसे काली अंतहीन रात आ जाने की सुचना दी। मुझे अस्पताल से मुक्ति की घोषणा की। मुझे सारी आशा निराशा के प्रभाव क्षेत्र से मुक्त कर दिया।

“शी इज नो मोर” उन्होने कहा था मेरी पीठ पर हाथ रख कर। प्लीज बी बोल्ड बी कांशस तुम्हे विम्मी का ध्यान रखना है प्लीज। तुम एक पिता हो एक मर्द हो।

मेरी पाषाण सद्रश्य आँखे निकट सोई विम्मी के मासूम चेहरे पर पड़ी। मेरा निर्जीव हाथ उसके ललाट पर उसके बर्फ सद्रश्य गालों पर टिका और एक आंसू मेरी आँखों से ढलका ना जाने बाईं या दाहिनी आँख से। बस उसके बाद मैँ उठ खड़ा हुआ। मुझे रोना नहीं आया मैँ कुछ क्षण साश्चर्य खड़ा रहा मुझे रोना चाहिए ? लेकिन कैसे रोता मै ? बहुत रो चूका था मैँ। आदमी था मैँ। मर्द था। बिना आवाज किये बिना आंसू बहाऐ पिछले चार सालोँ से तो रो रहा था मैं और कितना रोता ? बहुत सारा काम दिख रहा था। मैने गोपाल बाबु को फोन लगाया। डॉ गुप्ता ने भी मेरे कुछ परिचितों को फोन लगा दिया था। मैंने विम्मी को उठाया वो उठ कर भागी मम्मी के पास,

चीखी, चिल्लाई, रोई बेहोश हुई। मैने सब कुछ हो जाने दिया। फिर धीरे से उसे गले लगाया। हम घर पहुँच चुके थे। मैने कानपूर पटना और कुछ अन्य जगह फोन लगा दिए। गोपाल बाबु फिर सामने थे, सर जी आदित्य को सूचना? मेरा तो कोई जवाब नहीं मिला गोपाल बाबु को। आश्चर्य हुआ अबकि बार विम्मी का भी कोई आग्रह नहीं था आदित्य को फोन लगाने का, लेकिन गोपाल बाबु नहीं माने। उन्होंने फिर एक व्यर्थ सा उपक्रम करते हुए आदित्य को सुचना दे दी। उसका क्या जवाब था मैने नहीं पूछा। शाम होते होते सारे रिश्तेदार आ चुके थे। मेरा मष्तिक शून्य था। मेरी आँखे सिर्फ आँखे काम कर रही थी वो देख रही थी विम्मी को, जिसने अपनी आँखों से सारे आंसू पोंछ लिए थे। मेरी आँखे देख रही थी शमशान घाट का वो द्रश्य जब एक पिता और एक बेटी मिलकर चिता को अग्नि दे रहे थे। मेरे फ्लेट में जमा सारे रिश्तेदारों को देखती मेरी नजरे सिर्फ और सिर्फ विम्मी की गतिविधियों को देख रही थी। अब इन आँखों को किसी और को देखने की चाहत नहीं थी। और फिर मैने ये भी देखा कि विम्मी अपने मामा के साथ अपनी मम्मी के फुल हरिद्वार ले जा रही थी। मुझे ये ताकीद देते हुए कि हम लोग ४ दिन में वापस आयेंगे अपना ख्याल रखना।

मेरी आँखों ने देखा मोबाइल की स्क्रीन पर उभरता नाम विम्मी का और मेरे कानों में आवाज आई पापा मैँ विम्मी, हमने मम्मी की सारी पूजा पाठ तर्पण आदि कार्य कर लिए हैँ और हम वापस ट्रेन में बैठ रहे हैं।

और अब मेरी आँख के साथ मेरे कान मेरे हाथ पैर मेरा पूरा शरीर सक्रीय हुआ। मैने नजर डाली कल पर, हाँ कल शाम तक विम्मी आ जाएगी सारे मेहमान फिर इकठ्ठा होंगे, द्वादशा आदि शेष कार्य होंगे, फिर मेहमान रवाना होंगे। फिर हम दोनों बाप और बेटी होंगे घर में लेकिन अकेले नहीं रुकमनी की यादोँ के अलावा एक नई आशा के साथ, एक नए सपने के साथ, एक ध्येय के साथ। आप भूल रहे हैँ क्या? विम्मी का एम् बी बी एस का आखरी साल है वो पूरा करना है। फिर उसकी शादी करना है। उसकी घर गृहस्थी जम जाएगी तभी तो मैं फ्री हो पाउंगा और तभी, हाँ तभी तो फिर अपनी रुकमनी के बारे में सोचूँगा सिर्फ और सिर्फ रुकमनी के बारे में। और तब मैं पुरे सुकून से रो सकूंगा पिछले कई दिनोँ से रोके सारे आँसू बहा दूँगा, खाली कर दूँगा अपनी आँखों को।

•